Date - 6 April 2022

श्रीलंका का आर्थिक संकट

- श्रीलंका इस समय कठिन आर्थिक संकट से गुजर रहा है।

मौजूदा स्थिति:

- देश में विदेशी मुद्रा की भारी कमी हो गई है।
- श्रीलंका सरकार ईंधन सहित आवश्यक वस्तुओं के आयात के लिए भुगतान करने में असमर्थ है।
- इससे देश में 13 घंटे तक की बिजली कटौती की जा रही है.
- श्रीलंका के आम नागरिक भी आवश्यक वस्तुओं की कमी और बढ़ती महंगाई का सामना कर रहे हैं।
- पिछले महीने यानी फरवरी तक, देश का कुल धन भंडार केवल 31 अरब डॉलर बचा था, जबकि 2022 में करीब 4 अरब डॉलर का कर्ज चुकाना अभी बाकी है। इस कर्ज में परिपक्व होने वाला एक अरब डॉलर का 'अंतर्राष्ट्रीय सॉवरेन बांड (आईएसबी)' भी शामिल है।

श्रीलंका को इस स्थिति तक ले जाने वाले कारक:

- क्रमिक सरकारों द्वारा आर्थिक कुप्रबंधन: क्रमिक सरकारों ने दोहरा घाटा – बजट घाटा और चालू खाता घाटा – बनाया और जारी रखा है।
- वर्तमान सरकार की लोकलुभावन नीतियां: उदा. कर में कटौती।
- महामारी का प्रभाव: देश की महत्वपूर्ण 'पर्यटन अर्थव्यवस्था' को नुकसान के साथ-साथ विदेशी कामगारों द्वारा देश में प्रेषण की कमी।
- चावल उत्पादन में कमी: वर्तमान सरकार द्वारा वर्ष 2021 में सभी रासायनिक उर्वरकों पर प्रतिबंध का प्रस्ताव रखा गया था, जिससे देश में चावल के उत्पादन में भारी कमी आई थी, हालांकि बाद में इस निर्णय को उलट दिया गया था।

भारत के साथ सहयोग:

Yojna IAS

- भारत के साथ $500 मिलियन की 'लाइन ऑफ क्रेडिट' पर हस्ताक्षर के तहत, एक डीजल शिपमेंट जल्द ही श्रीलंका पहुंचने की उम्मीद है।
- श्रीलंका और भारत ने खाद्य और दवा सहित आवश्यक वस्तुओं के आयात के लिए एक अरब डॉलर के ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।
- श्रीलंकाई सरकार ने भी नई दिल्ली से कम से कम एक अरब डॉलर की मांग की है।

श्रीलंका की मदद करना भारत के हित में क्यों है?

- महत्वपूर्ण रूप से, चीन के साथ श्रीलंका का कोई भी मोहभंग भारत-प्रशांत में चीन के 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' खेल से श्रीलंकाई द्वीपसमूह को बाहर रखने के भारत के प्रयास को सुविधाजनक बनाता है।
- इस क्षेत्र में चीनी उपस्थिति और प्रभाव को नियंत्रित करना भारत के हित में है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन

- हाल ही में, नेपाल अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के 'फ्रेमवर्क समझौते' पर हस्ताक्षर करने वाला 105वां सदस्य देश बन गया है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) के बारे में:

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) की परिकल्पना भारत और फ्रांस द्वारा 'सौर ऊर्जा समाधान' के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के खिलाफ प्रयासों को संगठित करने के संयुक्त प्रयास के रूप में की गई थी।
- इसे 2015 में पेरिस में आयोजित संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC) में पार्टियों के 21वें सम्मेलन (COP21) में दोनों देशों के नेताओं द्वारा प्रस्तुत किया गया था।
- आईएसए सौर ऊर्जा का उपयोग करके अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच पूर्ण या आंशिक रूप से स्थित सौर संसाधन समृद्ध देशों का एक गठबंधन है।
- पेरिस घोषणा में, आईएसए को अपने सदस्य देशों के बीच सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए समर्पित गठबंधन के रूप में घोषित किया गया है।
- एक गतिशील संगठन के रूप में, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) वैश्विक मांग को बढ़ाने के लिए सौर क्षमता संपन्न देशों को एक साथ लाता है, जिससे ऊर्जा की थोक खरीद से कीमतों में कमी आती है और मौजूदा सौर प्रौद्योगिकियों के विस्तार की सुविधा होती है।
- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन मौजूदा सौर प्रौद्योगिकियों के बड़े पैमाने पर परिनियोजन की सुविधा प्रदान करता है, और सहयोगी सौर अनुसंधान एवं विकास और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देता है।

सचिवालय:

Yojna IAS

- भारत और फ्रांस द्वारा संयुक्त रूप से 'गुरुग्राम' में 'अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन' मुख्यालय की आधारशिला रखी गई।
- ISA के अंतरिम सचिवालय का उद्घाटन उन्होंने हरियाणा के गुरुग्राम में स्थित 'राष्ट्रीय सौर ऊर्जा परिसर संस्थान' में किया।

उद्देश्य:

- 'अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन' के प्रमुख उद्देश्यों में वैश्विक स्तर पर 1,000GW से अधिक सौर उत्पादन क्षमता को तैनात करना और 2030 तक सौर ऊर्जा में US$1000 बिलियन से अधिक का निवेश जुटाना शामिल है।
- आईएसए के तहत, प्रौद्योगिकी, उपलब्धता और आर्थिक संसाधनों के विकास, और भंडारण प्रौद्योगिकी के विकास, बड़े पैमाने पर विनिर्माण और नवाचार के लिए पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम करने की परिकल्पना की गई है।

मांग:

- कम लागत वाली प्रौद्योगिकी अधिक महत्वाकांक्षी सौर ऊर्जा कार्यक्रमों को जन्म दे सकती है।
- सौर ऊर्जा सस्ती और विश्वसनीय ऊर्जा का एक प्रमुख स्रोत है।
- परियोजना का सफल कार्यान्वयन सार्वभौमिक ऊर्जा पहुंच लक्ष्य (एसडीजी 7) को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

'अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन' के छह प्रमुख कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण के लिए 'गेम चेंजर' साबित हो सकते हैं।

- कृषि उपयोग के लिए सौर अनुप्रयोग,
- काफी हद तक वहनीय वित्त,
- मिनी ग्रिड,
- सौर छत
- 'सौर ई-गतिशीलता' और भंडारण
- बड़े पैमाने पर सौर पार्कों का निर्माण

Yojna IAS

नेपाल के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा

- हाल ही में नेपाल के प्रधान मंत्री ने भारत का दौरा किया और भारत के प्रधान मंत्री के साथ एक शिखर बैठक की।
- इससे पहले केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारत और नेपाल को जोड़ने वाली महाकाली नदी पर नए पुल के निर्माण और उत्तराखंड के धारचूला को नेपाल के धारचूला क्षेत्र से जोड़ने की योजना को मंजूरी दी थी|

यात्रा की मुख्य विशेषताएं:

कनेक्टिविटी:

- बिहार में जयनगर को नेपाल के कुर्था से जोड़ने वाली 35 किमी लंबी सीमा पार रेलवे लाइन का शुभारंभ किया गया।
- यह 548 करोड़ रुपये के भारतीय अनुदान द्वारा समर्थित एक परियोजना के तहत नेपाल में बर्दीबास तक दोनों पक्षों के बीच पहला ब्रॉड-गेज यात्री रेल लिंक है।

सोलू कॉरिडोर:

- 200 करोड़ रुपये की भारतीय ऋण सहायता के तहत भारत द्वारा निर्मित सोलू कॉरिडोर, जो 90 किमी है। लंबी 132 kV विद्युत पारेषण लाइन, नेपाल को सौंप दी गई है।
- यह लाइन पूर्वोत्तर नेपाल के कई दूरस्थ जिलों को देश के राष्ट्रीय ग्रिड से जोड़कर बिजली प्राप्त करने में मदद करेगी।

रुपे कार्ड:

- नेपाल में भारत का RuPay कार्ड लॉन्च किया गया।
- रुपे कार्ड का घरेलू संस्करण अब नेपाल में 1,400 पॉइंट-ऑफ-सेल मशीनों पर काम करेगा और इस कदम से दोनों देशों में पर्यटकों की संख्या बढ़ने की उम्मीद है।
- नेपाल, भूटान, सिंगापुर और संयुक्त अरब अमीरात के बाद रुपे कार्ड रखने वाला चौथा देश है।

समझौता ज्ञापन:

- भारत के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (105वां सदस्य देश बनने) में शामिल होने के लिए नेपाल द्वारा एक रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- तीन और समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं जिनमें रेलवे क्षेत्र में तकनीकी सहयोग बढ़ाने के लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन और नेपाल ऑयल कॉरपोरेशन के बीच पेट्रोलियम उत्पादों की आपूर्ति और दो समझौतों के बीच तकनीकी विशेषज्ञता को साझा करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) शामिल है।

Yojna IAS

विद्युत क्षेत्र में सहयोग पर संयुक्त वक्तव्य:

- भारत ने नेपाल में बिजली उत्पादन परियोजनाओं के संयुक्त विकास और सीमा पार पारेषण बुनियादी ढांचे के विकास सहित बिजली क्षेत्र में अवसरों का पूरा लाभ उठाने का आह्वान किया है।
- भारत क्षमता निर्माण और उत्पादन और पारेषण से संबंधित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को सीधे समर्थन के माध्यम से नेपाल के बिजली क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- नेपाल ने भारत के हाल के सीमा-पार विद्युत व्यापार विनियमों की भी सराहना की है जिसने इसे भारत के बाजार और भारत के साथ व्यापारिक शक्ति तक पहुंचने में सक्षम बनाया है। नेपाल अपनी अतिरिक्त बिजली भारत को निर्यात करता है।
- दोनों देश विलंबित पंचेश्वर बहुउद्देशीय बांध परियोजना (महाकाली नदी पर) पर काम में तेजी लाने पर सहमत हुए, जिसे क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

सीमा मुद्दा:

- भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी से नेपाल के प्रधान मंत्री द्वारा दोनों देशों के बीच सीमा विवाद को हल करने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया गया था।
- भारतीय पक्ष ने यह स्पष्ट किया कि दोनों देशों को बातचीत के माध्यम से सीमा मुद्दे को हल करने और ऐसे मुद्दों के राजनीतिकरण से बचने की जरूरत है।
- इससे पहले भारत ने कालापानी क्षेत्र को अपना हिस्सा दिखाने के लिए नेपाल द्वारा वर्ष 2020 में किए गए संवैधानिक संशोधन को खारिज कर दिया था।

भारत-नेपाल संबंधों के प्रमुख बिंदु:

ऐतिहासिक संबंध:

- नेपाल भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी देश है और सदियों पुरानी अपनी भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों के कारण अपनी विदेश नीति में विशेष महत्व रखता है।
- भारत और नेपाल दोनों में हिंदू और बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग हैं।
- रामायण सर्किट की योजना दोनों देशों के बीच मजबूत सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों का प्रतीक है।
- दोनों देशों के नागरिकों के पास आजीविका के साथ-साथ विवाह और पारिवारिक संबंधों की एक मजबूत नींव है। इस फाउंडेशन का नाम 'रोटी-बेटी का रिश्ता' रखा गया है।
- 1950 की भारत-नेपाल शांति और मैत्री संधि दोनों देशों के बीच मौजूद विशेष संबंधों का आधार है।
- नेपाल से निकलने वाली नदियाँ पारिस्थितिकी और जलविद्युत क्षमता के संदर्भ में भारत की बारहमासी नदी प्रणालियों को पोषित करती हैं।

व्यापार और अर्थव्यवस्था:

- भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार होने के साथ-साथ विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्रोत है।

कनेक्टिविटी:

Yojna IAS

- नेपाल एक भू-आबद्ध देश है जो तीन तरफ से भारत और एक तरफ तिब्बत से घिरा हुआ है।
- भारत-नेपाल ने अपने नागरिकों के बीच संपर्क बढ़ाने और आर्थिक विकास और विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न संपर्क कार्यक्रम शुरू किए हैं।
- भारत में रक्सौल को काठमांडू से जोड़ने के लिए इलेक्ट्रिक रेल ट्रैक बिछाने के लिए दोनों सरकारों के बीच समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
- भारत व्यापार और पारगमन प्रणाली के ढांचे के भीतर कार्गो की आवाजाही के लिए अंतर्देशीय जलमार्ग विकसित करना चाहता है, जिससे नेपाल को सागरमाथा (माउंट एवरेस्ट) को हिंद महासागर से जोड़ने के लिए समुद्र तक अतिरिक्त पहुंच मिल सके।

रक्षा सहयोग:

- इसमें द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के तहत उपकरण और प्रशिक्षण के माध्यम से नेपाल की सेना का आधुनिकीकरण शामिल है।
- भारतीय सेना की गोरखा रेजिमेंट का गठन आंशिक रूप से नेपाल के पहाड़ी जिलों से युवाओं की भर्ती करके किया जाता है।
- भारत 2011 से हर साल नेपाल के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास करता आ रहा है, जिसे सूर्य किरण के नाम से जाना जाता है।

सांस्कृतिक:

- नेपाल के विभिन्न स्थानीय निकायों के साथ कला और संस्कृति, शिक्षाविदों और मीडिया के क्षेत्र में लोगों से लोगों के संपर्क को बढ़ावा देने के लिए पहल की गई है।
- भारत ने काठमांडू-वाराणसी, लुंबिनी-बोधगया और जनकपुर-अयोध्या को जोड़ने के लिए तीन 'सिस्टर-सिटी' समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।
- एक 'बहन-शहर' संबंध दो भौगोलिक और राजनीतिक रूप से भिन्न स्थानों के बीच कानूनी या सामाजिक समझौते का एक रूप है।

मानवीय सहायता:

- नेपाल एक संवेदनशील पारिस्थितिक क्षेत्र में स्थित है, जहां भूकंप, बाढ़ से जीवन और धन दोनों का भारी नुकसान होता है, जिससे यह भारत को मानवीय सहायता का सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता बनाता है।

बहुपक्षीय साझेदारी:

- भारत और नेपाल बीबीआईएन (बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल), बिम्सटेक (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल), गुटनिरपेक्ष आंदोलन और सार्क (क्षेत्रीय सहयोग के लिए दक्षिण एशियाई संघ) जैसे कई बहुपक्षीय मंचों को साझा करते हैं।

मुद्दे और चुनौतियां:

चीनी हस्तक्षेप:

Yojna IAS

- एक स्थलबद्ध राष्ट्र के रूप में, नेपाल कई वर्षों से भारतीय आयात पर निर्भर था और भारत ने नेपाल के मामलों में सक्रिय भूमिका निभाई।
- हालांकि नेपाल हाल के वर्षों में भारत के प्रभाव से दूर हो गया है, चीन ने नेपाल में अपने निवेश, सहायता और ऋण में धीरे-धीरे वृद्धि की है।
- चीन नेपाल को अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) में एक प्रमुख भागीदार मानता है और वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देने की अपनी योजना के हिस्से के रूप में नेपाल के बुनियादी ढांचे में निवेश करना चाहता है।
- नेपाल और चीन के बीच बढ़ते सहयोग से भारत और चीन के बीच नेपाल की 'बफर स्टेट' स्थिति कमजोर हो सकती है।
- दूसरी ओर, चीन नेपाल में रहने वाले तिब्बतियों के बीच किसी भी चीन विरोधी भावना को रोकना चाहता है।

सीमा विवाद:

- यह मुद्दा नवंबर 2019 में उठा जब नेपाल ने एक नया राजनीतिक नक्शा जारी किया, जो उत्तराखंड के कालापानी, लिंपियाधुरा और लिपुलेख को नेपाल के हिस्से के रूप में प्रस्तुत करता है।
- नया नक्शा 'सुस्ता' (पश्चिम चंपारण जिला, बिहार) को नेपाल के क्षेत्र के रूप में भी दिखाता है।

Swadeep Kumar

Yojna IAS